B.A Part-2 Psy. Paper-3 Research Methodology Study material by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt. of Psychology Vaishali Mahila College, Hajipur) 02.07.2020

Merits and demerits of case Study Method

अब तक के विज्ञानियों में सबसे बड़े विज्ञानी जिन्होंने इस विधि का सर्वाधिक उपयोग किया है, वे हैं- Sigmund Freud जिन्होंने कुछ केसेज का अध्ययन करके व्यक्तित्व तथा मानसिक बीमारी के लिए

मशहूर सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। केस विवरण तैयार करते समय मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के प्रारंभिक सूचनाओं, उसके गत इतिहास तथा वर्तमान अवस्था पर अधिक ध्यान देते हैं। आवश्यकता पड़ने पर केस विवरण तैयार करने में मनोवैज्ञानिक विभिन्न प्रविधियों जैसे- साक्षात्कार, प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण आदि का उपयोग करते हैं। केस विवरण तैयार करने में प्रायः मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के अलावा उनके माता-पिता, दोस्त, पड़ोसियों आदि का भी साक्षात्कार लेते हैं। केस विवरण

तैयार करने के बाद उसका विश्लेषण किया जाता है और उस विश्लेषण के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार के बारे में एक सामान्य निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है।

<u>इस विधि के कुछ गुण तथा अवगुण है। इसके प्रमुख गुण निम्नांकित है-</u>

- नैदानिक विधि में मनोवैज्ञानिक चूंकि प्रत्येक अध्ययन किए जाने वाले व्यक्ति का एक अलग विस्तृत इतिहास तैयार करके उसके कारणों का पता लगाते हैं, इसलिए इस विधि

द्वारा व्यक्ति का गहन अध्ययन संभव है।

- नैदानिक विधि द्वारा व्यक्ति के मानसिक तथा शारीरिक विकासक्रम को अच्छी तरह जांचा जा सकता है। इस विधि द्वारा अध्ययन करने में मनोवैज्ञानिकों को इस बात की भरपूर जानकारी हो जाती है कि व्यक्ति किन- किन वैयक्तिक अवस्थाओं से गुजर चुका है तथा उनका प्रभाव उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास पर क्या पड़ता है।

- नैदानिक विधि में चूंकि अध्ययन का आधार केस विवरण होता है, अतः इस विधि में व्यक्ति की समस्याओं एवं उनके संभावित कारणों पर सीधा प्रकाश डालने का सुनहरा अवसर मनोवैज्ञानिकों को प्राप्त होता है।

<u>इन गुणों के बावजूद इस विधि के कुछ प्रमुख अवगुण है जिनमें निम्नांकित प्रमुख हैं-</u>

- नैदानिक विधि में व्यवहार के अध्ययन का आधार व्यक्ति का गत इतिहास होता है जो व्यक्ति के माता-

पिता, दोस्त तथा पड़ोसियों द्वारा दिए गए सूचनाओं पर आधारित होता है। अक्सर देखा गया है कि माता-पिता, दोस्त या पड़ोसी व्यक्ति की सच्ची घटनाओं आदि को विशेषकर वैसी घटनाओं को जिनका संबंध नैतिकता से होता है, छिपा लेते हैं। फलस्वरूप, उनके द्वारा प्रदत्त सूचनाएं दोषपूर्ण हो जाती हैं और उनके आधार पर जो अध्ययन किया जाता है, वह अधिक निर्भर योग्य नहीं रह जाता है।

- व्यक्ति के बारे में पूर्ण विवरण तैयार करने में जो सूचनाएं प्राप्त होती हैं

या जो इतिहास तैयार होता है, उसकी सत्यता की जांच करने का कोई उपयुक्त तरीका नैदानिक विधि में नहीं है।

- नैदानिक विधि द्वारा व्यक्ति की समस्या का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि मनोवैज्ञानिक काफी प्रशिक्षित हो तथा उन्हें साक्षात्कार तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उत्तम ज्ञान हो। प्रायः देखा गया है कि इस विधि का उपयोग एक साधारण मनोवैज्ञानिक भी करने लगते हैं। ऐसी परिस्थिति में इनसे

प्राप्त तथ्यों पर अधिक भरोसा नहीं किया जा सकता है।

- इसमें वस्तुनिष्ठता कम तथा आत्मनिष्ठता अधिक होती है। व्यक्ति के एक ही केस विवरण का विश्लेषण यदि अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों द्वारा की जाती है तो उसमें एकरूपता की कमी पाई जाती है इससे इस विधि की विश्वसनीयता में कमी आ जाती है।
- केस अध्ययन विधि में यदि अध्ययन में सम्मिलित किया गया व्यक्ति का

स्वरूप कुछ अनोखा है, तो इससे प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता है।

उपयुक्त अवगुणों के बावजूद यह विधि नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा काफी अधिक प्रयोग में लाई जाती है। यह एक ऐसी विधि है जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहारात्मक समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जा सकता है।